संपादकीय

दिल्ली हादसे की जवाबदेही तय हो

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भयावह भगदड़ में जिन 18 लोगों की जान गई, उसे महज दुर्घटना नहीं कहा जा सकता। सही मायने में यह योजना, दूरदर्शिता और जवाबदेही की विफलता थी। जैसा कि पहले से पता था कि रोज हजारों तीर्थयात्री प्रयागराज महाकुंभ के लिये ट्रेनों में चढ़ने के लिये उमड़ रहे थे, अधिकारी उस भारी भीड़ का अनुमान लगाने और उसे प्रबंधित करने में विफल रहे। जिसके चलते यह दुखद हादसा घटित हुआ। पूर्व रेल मंत्री पवन बंसल समेत कई विपक्षी नेताओं ने रेल मंत्री की जवाबदेही तय करने की मांग है। उनका कहना है कि यात्रियों की अप्रत्याशित संख्या में वृद्धि को देखते हुए भीड़ नियंत्रण के लिये उपाय करने में सरकार विफल रही है, जो एक गंभीर चूक है। निस्संदेह, महाकुंभ पहली बार नहीं हो रहा है। रेलवे यातायात संचालन में इसके पैमाने और प्रभाव का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। इसके बावजूद इस त्रासदी का सामने आना कई सवालों को जन्म देता है। सवाल मृतकों व घायलों को दिये जाने वाले मुआवजे को लेकर भी है। जबकि सामान्य दिनों में वर्ष 2023 की मुआवजा निर्देशिका में निर्धारित मुआवजा राशि में बड़ा अंतर है। विपक्ष का आरोप है कि सरकार प्रणालीगत मुद्दों को ठीक करने के बजाय नकद भुगतान बढ़ाकर तंत्र की साख को हुई क्षति की पूर्ति का प्रयास कर रही है। यही वजह है कि विपक्षी दल रेलमंत्री के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। हादसे की सूचना की लीपापोती को लेकर भी सवाल उठे हैं। कहा जा रहा है कि ऐसे रेल हादसों के वक्त रेलमंत्री के रूप में नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए लाल बहादुर शास्त्री और नीतीश आदि ने अपने पद से त्यागपत्र दिए थे। दरअसल, इस्तीफे से परे रेलवे में प्रणालीगत सुधार की भी आवश्यकता है। भारतीय रेलवे को अपने भीड़ प्रबंधन प्रोटोकॉल में सुधार करने की जरूरत है। खासकर धार्मिक पर्वों और त्योहार की भीड़ के दौरान अतिरिक्त सावधानी की जरूरत महसूस की जाती है। सही मायनों में दिल्ली समेत तमाम रेलवे स्टेशनों में तीर्थयात्रियों की अप्रत्याशित भीड़ को देखते हुए टिकटों के वितरण और नई ट्रेनों के संचालन को लेकर जिस संवेदनशील प्रशासन की जरूरत थी, वह नजर नहीं आया। ट्रेनों के आने के समय और उनके स्थगित होने पर कारगर वैकल्पिक व्यवस्था की जरूरत थी,वह नजर नहीं आई। दिल्ली हादसे के बारे में कहा जा रहा है कि एक नाम की दो ट्रेनों को लेकर मची भगदड़ हादसे की वजह बनी। एक अनुमान के अनुसार रेलवे प्रयागराज जाने वाले यत्रियों के लिए हर घंटे डेढ़ हजार सामान्य टिकट जारी कर रहा था। जिसके चलते प्लेटफॉर्मों पर तिल धरने की जगह नजर नहीं आ रही थी। निश्चित जगह में बढ़ती भीड़ को नियंत्रित करने तथा सीमित मात्रा में टिकट जारी करने की जरूरत थी। पैदल यात्रियों के लिये बने ओवरब्रिज पर लोग पहले ही बैठे थे और नई ट्रेन के आने की घोषणा से मची भगदड़ में कुछ लोग गिरे तो अन्य कई लोग गिरते गए, और दुखद हादसा हो गया। अनुमान लगाना चाहिए था कि सप्ताहांत में यात्रियों की संख्या बढ़ेगी, उसी हिसाब से चौकस सुरक्षा तथा ट्रेनों का संचालन व टिकट वितरण किया जाना चाहिए। हाल के दिनों में तीर्थ यात्रियों के रेल में असुरक्षित सफर करने के वीडियो सोशल मीडिया पर लगातार आ रहे थे। यहां तक कि कंफर्म टिकट वाले यात्री भी ट्रेनों में जगह नहीं पा रहे थे। आरक्षित डिब्बों में घुसने के लिये टकराव तक देखा जा रहा था। रेलवे को सुनिश्चित करना चाहिए था कि सफर के लिये यात्री अपनी जान को जोखिम में न डालें। यात्रियों के स्तर पर भी जिम्मेदार व अनुशासित व्यवहार होना चाहिए था। तीर्थयात्रियों में जो संयम व धैर्य होना चाहिए, वह भी अव्यवस्था के चलते चूकता नजर आया है। सही मायनों में तीर्थयात्री यदि अपनी सुरक्षा के प्रति गंभीर रहें तो ऐसे हादसे टाले जा सकते हैं। दरअसल, भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में भीड़ प्रबंधन के वैज्ञानिक तौर-तरीके अपनाये जाने की जरूरत है। मुट्ठीभर पुलिसकर्मियों के सहारे भीड़ नियंत्रण संभव नहीं है।

शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है

माता-पिता परीक्षा के समय जलविहीन मछली की तरह तड़पते हैं, ताकि उनका बच्चा किसी भी तरह से पढ़ाई में पीछे न रह जाए और अच्छे से अच्छे अंक प्राप्त कर उनका नाम रोशन करे। वे बच्चों को दिन-रात मेहनत करवाकर परीक्षा के लिए तैयार करते हैं और परीक्षा देने के लिए भेजते हैं। जितने दिन तक परीक्षा चलती है, माता-पिता बच्चों को अपना घर का सारा काम करने के बावजूद परीक्षा के लिए समय देकर कठिन से कठिन मेहनत करवाते हैं और अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे पद पर पहुंचाना चाहते हैं, ताकि आने वाले समय में उनके बच्चे भी उनका सहारा बनें।

शिक्षा और परीक्षा ऐसे दो शब्द हैं जिनका आपस में गहरा संबंध है। शिक्षा शब्द एक स्त्रीलिंग शब्द है जिसका अर्थ विद्या, ज्ञान, पाठ, उपदेश, सबक व सीखना है। इसी प्रकार से परीक्षा शब्द भी स्त्रीलिंग शब्द है जिसका अर्थ इम्तिहान, योग्यता को परखना है। शिक्षा का अर्थ बालक का सर्वांगीण विकास करना है। परीक्षा का अर्थ एक निश्चित अवधि में दी गई शिक्षा को एक निश्चित अवधि में जांचना व परखना है कि क्या विद्यार्थी को जो शिक्षा दी गई, वह उसको ग्रहण कर पाया है या नहीं कर पाया? यदि कर पाया है तो कितनी ग्रहण कर पाया है? अभी उसको खरा उतरने के लिए कितनी और मेहनत की जरूरत है। यही परीक्षा है। शिक्षा शब्द देखने में तो बहुत छोटा शब्द लगता है, वास्तव में यह बहुत व्यापकता अपने में समेटे हुए है। शिक्षा केवल स्कूलों, कॉलेजों तक ही सीमित नहीं है। इससे परे भी शिक्षा का क्षेत्र है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है। इसका क्रम जन्म से लेकर मृत्यु तक चलता रहता है। यह कभी भी रुकता नहीं है। यही नहीं कि मनुष्य विद्यालय से ही शिक्षा ग्रहण करता है। वह इस संसार में प्रकृति की प्रत्येक वस्तु सजीव-निर्जीव से हर क्षण शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा एक ऐसा वट वृक्ष है, दूसरे व्यवसाय इसकी शाखाएं हैं। प्रत्येक व्यवसाय शिक्षा से जुड़ा हुआ है। बड़े से बड़े डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, अध्यापक, नेता, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, सभी शिक्षा के मार्ग से ही गुजर कर देश की ऊंचाई को छू पाए हैं।

शिक्षा चाहे निजी शिक्षण संस्थान में ग्रहण की जाए या फिर सरकारी शिक्षण संस्थान में कठिन से कठिन अग्नि परीक्षा से सभी को गुजरना ही पड़ता है। परीक्षा के बिना तो विद्यार्थी का मूल्यांकन ही नहीं किया जा सकता। परीक्षा ही मूल्यांकन का एकमात्र उपाय है। परीक्षा चाहे कैसे भी हो, प्राचीन काल में भी विद्यार्थियों को परीक्षा से गुजरना पड़ता था और आजकल भी विद्यार्थियों को परीक्षा से गुजरना पड़ता है। वैसे तो माता-पिता अपने बच्चों का वर्ष के आरंभ से ही पूरा ध्यान रखते हैं, जैसे बच्चों को सुबह जल्दी उठाना, पढ़ने के लिए बैठाना, नहलाना, कपड़े पहनना, बैग को हर रोज चेक करना, उसमें किताबें, कॉपियां, पढ़ने-लिखने की हर सामग्री डालना। बच्चों के खाने-पीने का भी पूरा ध्यान रखना, उनको तैयार करके विद्यालय को भेजना, उनके वापस घर आने पर उनको कपड़े बदलने के लिए कहना। जूते, जुराबें एक तरफ रखने को कहना, हाथों को अच्छी तरह से धोकर के खाना खाने को कहना, गर्मी-सर्दी से बचाव करना, उनकी सेहत का पूरा ध्यान रखना, उनकी हर जरूरत को पूरा करना, उनका हर वस्तु आवश्यकता अनुसार उपलब्ध करवाना। शाम को हर रोज पढ़ने को बिठाना, विद्यालय में क्या पढ़ा, इसके बारे में पूछना और उनका अगले दिन का काम करवाना, परीक्षा की तैयारी करवाना, उनको अच्छे-अच्छे संस्कार देना, उनका मार्गदर्शन करना, उनको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना, उनकी हर गतिविधि पर ध्यान रखना आदि। पढ़ाई के मामले में जितनी चिंता माता-पिता करते हैं, इतनी चिंता तो बच्चे भी नहीं करते।

परीक्षा बच्चों की न हो करके मानो माता-पिता की ही परीक्षा हो। जैसे-जैसे परीक्षा सामने आती जाती है माता-पिता की चिंता बढ़ती जाती है। माता-पिता परीक्षा के समय जलविहीन मछली की तरह तड़पते हैं, ताकि उनका बच्चा किसी भी तरह से पढ़ाई में पीछे न रह जाए और अच्छे से अच्छे अंक प्राप्त कर उनका नाम रोशन करे। वे बच्चों को दिन-रात मेहनत करवाकर परीक्षा के लिए तैयार करते हैं और परीक्षा देने के लिए भेजते हैं। जितने दिन तक परीक्षा चलती है, माता-पिता बच्चों को अपना घर का सारा काम करने के बावजूद परीक्षा के लिए समय देकर कठिन से कठिन मेहनत करवाते हैं और अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे पद पर पहुंचाना चाहते हैं, ताकि आने वाले समय में उनके बच्चे भी उनका सहारा बनें। आवश्यकता के समय उनकी आवश्यकता अनुसार आवश्यकता पूरी करें। कई बच्चे परीक्षा से डरते हैं। जैसे-जैसे सामने आती परीक्षा है परीक्षा, बच्चा-बच्चा चिल्लाता हाय परीक्षा! हाय परीक्षा! माता-पिता की भी नींद उड़ जाती है, बच्चों की उन्हें चिंता सताती है, कई बार परीक्षा बच्चों को कम, माता-पिता को ज्यादा डराती है। बच्चों और अभिभावकों में परीक्षा का डर दूर करने के लिए ठोस उपाय किए जाने की जरूरत है। किसी भी परीक्षा को सहज क्रिया के रूप में लेने की जरूरत है। परीक्षा का डर मन में नहीं बैठाया जाना चाहिए। एक परीक्षा में अगर बच्चा फेल हो जाता है, तो दूसरी में वह फिर प्रयास कर सकता है। परीक्षा के पार भी जीवन है। बच्चों को कुछ संस्कार दिए जाने चाहिए। बचपन से ही संस्कारों की आदत डालनी चाहिए। अगर उनके भीतर संस्कार होंगे, तो वे बड़ी से बड़ी परीक्षा से भी गुजर सकते हैं। पढ़ाई के दौरान केवल पढ़ाई ही नहीं करनी है, बल्कि जरूरी व्यायाम, योग और खेलों में सक्रियता भी जरूरी है। बच्चों पर पढ़ाई का बहुत ज्यादा बोझ नहीं डालना चाहिए। परीक्षा में अगर एक बार फेल हो भी गए, तो कम से कम अनुभव तो मिलेगा ही, परीक्षा को एक सहज प्रक्रिया के रूप में लेना है, और फेल होने पर फिर से प्रयास करने चाहिएं।

-डा.जयपाल ठाकुर

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

जिनके विचार अनुकरणीय वही होते हैं सच्चे वंदनीय

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

किसी व्यक्ति समाज अथवा राष्ट्र की महानता उसके भौतिक बल और पौरुष से ही नहीं बल्कि आचार विचार से मूल्यांकित होती है। देखा जाय तो दैहिक शक्ति तो पशुओं में भी बहुत होती है लेकिन उनमें आचार विचार जैसी कोई वस्तु नहीं होती। विवेक का अभाव ही पशुता है दानवता है और विवेक का प्रादुर्भाव ही मानवता और देवत्व का प्रकट स्वरूप है। इसलिए हमारे भारत के विद्वान् मनीषियों ने पवित्र आचार विचार रखने वालों को ही महान माना है और उन्हें वंदन के योग्य बताया है। आचार अर्थात श्रेष्ठ आचरण जो व्यक्ति के हृदय में उत्कृष्ट विचारों को प्रसूत करता है। जिनके अनुकरण से अन्य जन भी लाभान्वित होते हैं। यह तो पौराणिक काल से ही देखने और सुनने में आ रहा है कि इस धरती के मानव समाज ने उन्हीं महापुरुषों की वंदना की है जिनके पवित्र अंत:करण से श्रेष्ठतम विचार उद्घाटित हुए और उन विचारों के अनुकरण से सामान्य जन को सुखमय जीवन जीने की दिशा प्राप्त हुई। यहां यह भी एक अचंभित कर देने वाला तथ्य है कि जब भी किसी महापुरुष के हृदय से कोई उच्चतम विचार प्रकट होता है वह किसी जाति धर्म भाषा अथवा किसी तरह की सीमाओं से बँधा नहीं होता। उत्कृष्ट विचार तो अनंत आकाश से उदित होने वाले सूर्य की तरह है जिसकी प्रकाशमयी किरणों से सम्पूर्ण धरती का अंधकार तिरोहित हो जाता है। बस, फर्क इतना है कि सूर्य का प्रकाश बाह्य जगत के अंधकार को मिटाता है और श्रेष्ठ विचारों का प्रकाश हम सबके अंतर हृदय को अलोकित कर देता है। यही समझ लो कि धर्म और ईश्वर के प्रति नास्तिकता का भाव रखने वाले व्यक्ति के हृदय में भी आस्तिकता का नव अकुंरण प्रस्फुटित कर देता है। इसीलिए तो सद्गुरु कहते हैं मनुष्य को अपना आचरण श्रेष्ठ बनाना चाहिए और पवित्र अंत: करण में परिशुद्ध विचारों की फ़सल उगाना चाहिए। जिसका लाभ समग्र मानव समाज को प्राप्त हो सके। ऐसे श्रेष्ठतम विचार जिनके अनुकरण से मानव मात्र को जीवन समाधान प्राप्त हो सके। जीवन में सुख समृद्धि और शांति की जो आकांक्षा है ये मनुष्य मात्र के जिसकी पूर्णता पवित्र आचार और श्रेष्ठ विचार से ही संभव है।

शर्म का नहीं सेहत का विषय वायु उत्सर्जन

शरीर से अपान वायु का उत्सर्जन बेहतर पाचन प्रक्रिया से जुड़ा है और हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य का संकेतक भी है। बेशक सार्वजनिक तौर पर यह अशिष्टता व लज्जा का विषय समझा जाये लेकिन चिकित्सा विज्ञान के नजरिये से यह कुदरती प्रक्रिया है। इसके जरिये शरीर की सेहत संबंधी कई स्थितियों को भी जान सकते हैं।

हालांकि छींक आना, डकार आना या फार्टिंग सामान्य शारीरिक गतिविधि या जैविक क्रियाएं हैं, लेकिन न केवल अपने देश बल्कि दुनिया के ज्यादातर समाजों में इनमें से कुछ प्रक्रियाओं खासकर अपान वायु उत्सर्जन या फार्टिंग को अशिष्टता के आईने से देखा गया है। अकसर लोग सब के बीच गैस पास हो जाने पर शर्म से पानी-पानी हो जाते हैं। दरअसल इस क्रिया से पैदा होने वाली दुर्गंध और आवाज ऐसी स्थिति पैदा करती है कि व्यक्ति शर्मिंदगी महसूस करता है। हालांकि मेडिकल साइंस की नजरों से देखें तो अपान वायु का उत्सर्जन शरीर की दूसरी प्रक्रियाओं की तरह की स्वत: व जरूरी प्रक्रिया है। यही नहीं यह सेहत का विषय भी है; क्योंकि फार्टिंग में स्वास्थ्य के कई जरूरी संकेतक छिपे होते हैं। अपान वायु का बाहर आना हमारे पाचन तंत्र और संपूर्ण स्वास्थ्य का आईना है। इसके जरिये हम अपने शरीर की सेहत संबंधी कई स्थितियों को जान सकते हैं। यानी यह गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सिस्टम की कार्यप्रणाली को दर्शाता है।

पाचन प्रक्रिया में अपान वायु उत्सर्जन

वास्तव में पाचन प्रक्रिया के दौरान, जब हमारा शरीर खाए गये भोजन को तोड़ता है, तब पेट और आंतों में गैस पैदा होती है। यह गैस मुख्य रूप से हाइड्रोजन, कार्बन-डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रोजन जैसी गैसों से मिलकर बनी होती है। जब यह वायु बड़ी मात्रा में आंतों में एकत्र हो जाती है तो इसे शरीर से बाहर निकालने की जरूरत होती है जो कि पाद आने की प्रक्रिया के रूप में हमारे सामने आती है। अगर कोई व्यक्ति नियमित रूप से अपान वायु उत्सर्जन कर रहा है,लेकिन उसे पेट में दर्द या असुविधा आदि नहीं होती, तो यह आमतौर पर स्वस्थ पाचन तंत्र का संकेत है। लेकिन यदि बदबूदार है या इसमें असहजता महसूस हो तो निश्चित रूप से यह पाचन समस्या का संकेत है। इस दौरान दर्द और बदबू फूड इंटोलरेंस का भी नतीजा हो सकता है।

अच्छी सेहत से संबंध

अगर कोई व्यक्ति सामान्य तौरपर दिन में 10-20 बार अपान वायु का उत्सर्जन करता है, लेकिन पेट में किसी तरह का दर्द आदि महसूस नहीं होता तो यह उसके पाचनतंत्र के ठीक होने की निशानी है। यदि इसमें हल्की बदबू है तो भी यह सामान्य है, लेकिन यदि सामान्य से ज्यादा बदबू है तो यह खराब पाचनतंत्र या तात्कालिक रूप से किसी खाद्य पदार्थ हुए संक्रमण का भी संकेत हो सकता है। यह भी कि हमारा शरीर कुछ खाद्य पदार्थों को सही से पचा नहीं पा रहा है। अगर फार्टिंग के दौरान पेट में दर्द या ऐंठन होती है, तो यह आंतों में किसी समस्या का सूचक है। वहीं यदि किसी की पाचन प्रक्रिया के दौरान ज्यादा डकार और कम अपान वायु आ रही है, तो इसका मतलब है कि उसके शरीर में गैस पेट के ऊपरी हिस्से में अधिक इकट्ठी हो रही है।

खानपान के भी खोलता है राज़

अगर पेट से उत्सर्जित अपान वायु बहुत बदबूदार है तो इसका मतलब है कि उसने ज्यादा प्रोटीन वाले खाद्य, अंडे, प्याज या सल्फरयुक्त खाद्य पदार्थ खाए हैं। अगर पेट में बहुत ज्यादा गैस बन रही है तो यह इंगित करती है कि आप बहुत ज्यादा फाइबर खा रहे हैं या आपकी आंतों में गुड बैक्टीरिया और बैड बैक्टीरिया का संतुलन बिगड़ा हुआ है। लेकिन अगर बहुत कम वायु आ रहा है तो यह कब्ज यानी कांस्टीपेशन की समस्या का सूचक हो सकता है क्योंकि जब पेट में मल जमा हो जाता है, तो गैस बाहर नहीं निकल पाती। अगर पेट में दर्द के साथ गैस बन रही है तो यह अपच, गैस्ट्रिक समस्या या आंतों में सूजन का लक्षण हो सकता है। दरअसल, अपान वायु उत्सर्जन शारीरिक गतिविधि और सेहत का विषय है न कि शर्म का। अगर वायु सामान्य आ रहा है और इससे कोई असुविधा नहीं, तो यह सेहतमंद पाचन तंत्र का सबूत है। लेकिन अगर इस प्रक्रिया में अत्यधिक बदबू महसूस हो रही है तो अपनी डाइट पर ध्यान दें और डॉक्टर से मिलें। क्योंकि स्वस्थ रहने के लिए पाचन का सही तरीके से काम करना जरूरी है।

वर्गपहेली 2420

बायें से दायें:- 1) गत, 3) बहुत कंजूस, 5) मौक़े पर, 6) झंझट, 8) क़िस्म, 10) व्यापार, 13) प्रस्थान, 15) सारा, 16) जानकारी, 17) अवरोध; बाधा, 19) रिश्वत, 20) एक फल, 21) नमक, 22) जन्मदिवस, 25) अस्वीकृत, 26) दुनिया.

ऊपर से नीचे:- 1) आजीविकाहीन, 2) भोज, 3) दफ़ा, 4) ठंड, 7) बड़प्पन, 9) पात्र, 11) नक़द, 12) खारापन, 14) पुनरागत, 17) कार्यान्विति, 18) चालाक, 19) मँडराना, 20) पूर्वलक्षण, 23) पत्थर के छोटे टुकड़े, 24) मक्कायात्रा.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

त	ब	दी	ली	■	त	ज	र	बा	■
क्र	■	ब	■	अ	क	ड़	■	द	स
दी	■	ना	या	ब	■	ना	क	■	र
र	स	■	री	■	पी	■	मा	प्र	स
■	रा	ज	■	अ	न	श	न	■	री
■	स	मा	प	न	■	ल	■	हा	नि
पे	र	ना	■	ब	रा	ग	ना	■	गा
द्रो	■	■	भा	र	■	म	■	दे	ह
ल	■	त	ना	त	नी	■	सो	ना	■

दैनिक सचएक्सप्रेस पंचांग

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

गुरुवार 20 फरवरी 2025
सूर्योदय-प्रात: 6:48 बजे
सूर्यास्त-शाम 6:08 बजे
चंद्रोदय - 12:20
चंद्रास्त - 12:00
शक संवत् - 1946
विक्रम संवत -2081 पिंगल
पूर्णिमांत महीना- फाल्गुन
पक्ष - कृष्ण
तिथि -सप्तमी सुबह 6:53 तक पश्चात् अष्टमी
नक्षत्र - विशाखा दिन 10:56 तक पश्चात् अनुराधा
योग - ध्रुव सुबह 10:33 तक पश्चात् व्याघात
करण - बव सुबह 10:02 तक पश्चात् बालव
सूर्य राशि -कुंभ
चंद्र राशि - वृश्चिक

शुभांक 1-6-7

मेष

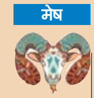

कार्य की अधिकता। जिससे थकान व आलस्य की स्थिति बन सकती है। व्यापारी बंधु को लाभ, पार्टनरशीप में कोई नया कार्य शुरू कर सकते हैं। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - लाल।

वृष

व्यापारी वर्ग आज कोई नया कारोबार शुरू कर सकते हैं, यदि पूर्व से कोई योजना हो तो। परिवार में शुभता। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग - भूरा।

मिथुन

कार्य क्षेत्र में उत्तम वातावरण प्राप्त होगा। जिससे अच्छे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। शिवजी को हरा बेल फल अर्पित करें। शुभ अंक - 1, शुभ रंग- गहरा हरा।

कर्क

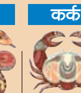

भाग्य मजबूत। विशेष अवसर प्राप्ति सम्भव। परिवार में धार्मिक कार्य की योजना बन सकती है। शिवजी को सफेद सुगंधित फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग- भूरा।

सिंह

स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। अनावश्यक किसी से बहस न करें। परिवार का वातावरण तनाव पूर्ण हो सकता है। ।शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग- लाल।

कन्या

विवाह योग्य जातकों के लिए समय अनुकूल। कार्य क्षेत्र में विशेष सहयोग प्राप्ति योग, जिससे मन उत्साहित। शिवजी को बेलपत्र अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- हरा।

तुला

किसी पर भी अति विश्वास न करें। कार्य क्षेत्र में विरोधी तत्व सक्रिय, सजग रहें। शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक - 6, शुभ रंग- सफेद।

वृश्चिक

विवाह योग्य जातकों को आज अच्छे प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं। पर सोच समझकर निर्णय करें। व्यापारी वर्ग को लाभ। शिवजी को लाल गुलाल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग- मेहरून।

धनु

पुराने लम्बित कार्य आज सम्भव। उचित प्रयास करें। भूमि भवन के कोई कार्य अटके हो तो उन पर भी फोकस करें। शिवजी को अक्षत और मिश्री अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग- हरा।

मकर

दिन शुभ। कार्य क्षेत्र में उन्नति कारक योग। जिसका उचित लाभ ले तो भविष्य गत विशेष शुभ योग। शिवजी को लाल फल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग - नीला।

कुंभ

दिन शुभ। परिवार में धार्मिक कार्यों का आयोजन सम्भव। कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति योग। संतान क्षेत्रीय उत्तम समय। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ रंग- 5, शुभ रंग- सफेद।

मीन

दिन सामान्य। कार्य की अधिकता से मानसिक तनाव संभव। संतान क्षेत्रीय कुछ चिंता उभर सकती है। लम्बी यात्रा के योग। शिव जी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - पीला।

ग्रह स्थिति

ग्रह स्थितिः सूर्य- मकर राशि में, ता. 12 की रात्रि 2:18 से कुंभ राशि में। मंगल- मिथुन राशि में वक्री, ता.24 की रात्रि 9:01 से मार्गी। बुध- मकर राशि में, ता. 11 के दिन 12:26 से कुंभ में, ता. 26 की रात्रि 10:57 से मीन में। गुरू- वृष राशि में वक्री, ता.4 की रात्रि 12:53 से मार्गी। शुक्र- मीन राशि में। शनि-कुंभ राशि में। राहु-मीन राशि में। केतु-कन्या राशि में।

दिशा शूल

दक्षिण दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर दही का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया

शुभ सुबह 6:00-7:30 तक
चर सुबह 10:30-12:00 तक
लाभ दिन 12:00-1:30 तक
अमृत दिन 1:30-3:00 तक
शुभ अपराह्न 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11:50 से दिन 12:20 तक!

सर्वार्थ सिद्धि योग

सर्वार्थ सिद्धि योग: ता. 2 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता.4 को सूर्योदय से प्रातः 7:41 तक। ता. 5 को रात्रि 11:13 से रात्रि अंत तक। ता. 10 को शाम 6:42 से रात्रि अंत तक। ता. 11 को शाम 6:59 से रात्रि अंत तक। ता. 16 को सूर्योदय से रात्रि 12:38 तक। ता. 20 को सुबह 10:56 से ता. 21 के दिन 1:02 तक। ता. 23 को सूर्योदय से दोपहर 3:58 तक।

त्रिपुष्कर योग - ता.9 को शाम 6:54 से रात्रि 8:08 तक।
अमृत सिद्धि योग: ता. 4 को सूर्योदय से प्रातः 7:41 तक। ता. 16 को सूर्योदय से रात्रि 12:38 तक।

रवि योग

ता.2 की सुबह 7:13 से ता.3 की रात्रि 12:56 तक। ता. 4 की सुबह 7:12 से ता. 5 की रात्रि 8:37 तक। ता. 10 की शाम 6:08 से ता. 11 की शाम 6:38 तक। ता. 16 की सुबह 7:03 से ता. 17 की सुबह 4:35 तक। ता. 20 की दोपहर 1:34 से ता.22 की दोपहर 3:58 ता. 23 की सुबह 6:56 से शाम 6:47 तक।

पुष्य नक्षत्र: ता. 10 को शाम 6:42 से ता. 11 की शाम 6:59 तक।